अध्याय पहला

मेहरून्निसा परवेज की जीवनी

अध्याय क्रमांक 1

"मेहरुन्निसा परवेज की जीवनी"

प्रस्तावना -

'मेहरुन्निसा परवेज' आधुनिक हिन्दी साहित्य की लेखिकाओं में बहुचर्चित नाम है। सुसंस्कृत, व्यक्तित्वसंपन्न, प्रगतिशील विचारधारा की 'मुस्लिम स्त्री' इस नाते भी उनका अलग, विशेष स्थान है। ऐसे व्यक्तित्व महिला का जीवन परिचय इसप्रकार है -

जन्म -

मेहरुन्निसा परवेजजी का जन्म मुस्लिम परिवार में 10 दिसम्बर 1944 में बालाघाट में चलती बैलगाडी में हुआ। अजान में ही उनका नाम मेहरुन्निसा रखा गया। इतिहास प्रसिध्द नूरजहाँ का पहला नाम भी मेहरुन्निसा था, उनका भी जन्म इसप्रकार चलती बैलगाडी में हुआ था। इसलिए इनका नाम भी मेहरुन्निसा रखा गया। जिसका अर्थ है 'प्यार करनेवाली स्त्री'।

माता-पिता-पति -

मेहरुन्निसा के पिताजी अे. एच. खान डिप्टी कलेक्टर थे। पति उर्दू के प्रसिध्द शायर श्री रउफ परवेज है। माताजी का नाम शहजादी बेगम था और वे मुगल घराने की थी।

शिक्षा -

मेहरुन्निसा की किताबी बस्ते की तालीम के संबंध में कहा जा सकता है कि, उन्हें इतनी तालीम मिली कि, अपना साहित्य लिख सकती है और इतनी तालीम नहीं मिली कि, अपनी जिन्दगी के लिए

नौकरी कर सके। इसका कारण भी यह है कि, मुस्लिम परिवारों में बहुत जल्दी शादी करने का रिवाज है, उसके अनुसार उनकी पन्द्रह साल की उम्र में शादी हो गयी और इसीकारण आगे की पढाई नहीं हो सकी।

साहित्य - सृजनारंभ -

मेहरून्निसाजी ने 1962 से लिखाना आरंभ किया। 1963 में पहली कहानी 'नई कहानियाँ' में छपी थी, जिसका नाम था पाँचवी कब्र। जिसका पाँच भाषा में अनुवाद हुआ है। आज तक प्रकाशित साहित्य इसप्रकार

उपन्यास -

'आँखों की देहलीज', 'उसका घर', 'कोरजा', 'अकेला पलाश'

कहानी संग्रह -

'आदम और हव्वा', 'टहनियोंपर धूप', 'गलत पुरूष', 'फालगुनी', 'अंतिम चढाई'।

आजकल आप 'ओढना', तथा 'साँकल' दो उपन्यास लिख रही है।

आपके अप्रकाशित साहित्य का परिचय इसप्रकार है -

'कोई नही','तुम्हारी गोरी सी हथेली', 'युद्ध और माँ' §कहानीसंग्रह§

सामाजिक कार्य-परिचय तथा प्राप्त पुरस्कार -

आदिवासी एवं महिलाओं की सामाजिक समस्याओं के प्रति इनकी विशेष रूचि है। वर्ष 1974 में ये बाल एवं परिवार कल्याण परियोजना, जिला बस्तर की अध्यक्ष रही। वर्ष 1975 से ये आकाशवाणी सलाहकार समिती की सदस्या हैं। वर्ष 1977 में बस्तर जिले की ओर से ये समाज कल्याण परिषद मध्यप्रदेश की सदस्या नियुक्त हुई। ये जिले की महिला काँग्रेस की अध्यक्षा भी रही।

वर्ष 1980 में मध्यप्रदेश शासनद्वारा इन्हें राष्ट्रीय पारितोषिक "आखिल भारतीय महाराजा वीरसिंह देव", पुरस्कार इनके "कोरजा" उपन्यास पर प्रदान किया गया। इसीप्रकार उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनउ, द्वारा इसी उपन्यासपर सन्मानित कार्य किया गया।

प्रेरणास्त्रोत -

मेहरून्निसाजी अपने पिताजी से बहुत ज्यादा प्रभावित रही, उनसे ही लेखान-शक्ती उन्हें प्राप्त हुअी। शायद इसके परिणाम स्वरूप उनकी लिखावट अपने पिताजी के लिखावट से मिलती-जुलती है। हिन्दी भाषा का प्रेम तथा पढाई लिखाई की प्रेरणा उन्हें पिताजी से ही प्राप्त हुई।

माताजी से भी उन्हें लिखाने की प्रेरणा प्राप्त हुई। वे तो मानती है, "दर्द की पहचान मैंने माँ के दवारा ही जानी, उन्होंने ही मुझे सिखाया की दर्द क्या होता है।" [1]

अपने लेखान कार्य के प्रेरणास्त्रोत के संबंध में उन्होंने बताया कि "जैसे मैंने बडे बडे महापुरूषों से तो जिन्दगी में सीखा ही है, उनकी जीवनी पढी है, क्योंकि मेरे पिताजी की बहुत बडी लायब्ररी थी, तो उनकी पुस्तकों के बीच में मैंने अध्ययन किया है, लेकिन मैंने अपने आसपास की जिन्दगी से भी अध्ययन किया है, जैसे एक मामूली सी चींटी, एक पक्षी, यह मौसम, पेड पौधे, और यह महसूस किया है कि इन चिजों से मैंने बहुत सिखा उन्होंने मुझे बहुत शक्ती दी। जीवन में बहुत सँभाले रखा। मैंने इस लोगों से अधिक प्रेरणा ली, दुनिया से कम।" [2]

साहित्य - सृजन का उद्देश्य -

मेहरून्निसाजी के साहित्य की विशेषता यह रही है कि वह सहेतुक प्रयास का फुल है, सप्रयोजन लिखा साहित्य है। इसकी पुष्टि करता उनका यह वक्तव्य इसका प्रमाण है कि, "छोटे छोटे सुख को जी लेना, छोटे छोटे दुःख में रो लेना, और फिर धुले हुए चेहरे लेकर नयी सुबह को आँख खोलना

ही शायद जिंदगी है। मुझे तो कभी वकतव्य देना नही आया। मेरी कहानियाँ यदि अपना परिचय खुद न दे पायी, तो समझूँगी, मैंने जो जिया जो पाया सब झूठ के सिवा कुछ भी नही"। [3]

इनकी साहित्यिक रचनाओं में आदिवासीयों की गरीबी एवं शोषण की समस्या पर पैनी दृष्टी तथा सामान्य गरीबों के चित्रण को विशेष रूप से सराहा गया है। इनकी रचनाओं में महिलाओं की दयनीय स्थिती, गरीबों के शोषण एवं अन्धविश्वास के विरूद्ध विद्रोह की स्पष्ट झलक दृष्टगत होती है। बस्तर जिले के आदिवासियों की समस्या, शोषित जातियों एवं सामान्य सामाजिक समस्याओंपर लिखे गये लेख लोकप्रिय रहे हैं।

निष्कर्ष §मूल्यांकन§ -

मेहरून्निसा के जीवनी से परिचित होने से निष्कर्षत: हम कह सकते है कि, लेखिकाने अपनी निजी जिन्दगी में जो अनुभव किया उन अनुभवोंको कहानी में ढालकर उनका उदात्तीकरण किया है, इसलिए तो उनकी हर कहानी एक दर्द की अस्फूट सी हिचकी है, उनकी कहानियों में कहीं भी झूठापन, नाटकियता नही आयी है, क्योंकि, दर्द कभी झूठा नहीं होता। कहानी के विषय भारतीय नारी की मानसिक और भौतिक समस्याओं पर केंद्रित है। आज स्त्री लगातार तीव्र होती जा रही है, और इस अहसास से गुजर रही है कि, परिवार, समाज, संस्कृति, नैतिकता और कानून सभी उसे बाँधते आये है। और गुलामी की हद तक जानेवाली मर्यादाओं को उसपर लादते रहे है। ताकि बहुविध शोषण की इकाई के रूप में उसका अस्तित्व बना रहे। आज की नारी इसे समझ रही है और इससे मुक्त होना चाहती है, लेकिन इस सामाजिक ढाँचे में उसकी यह आकांक्षा एक गहरी छटपटाहट के सिवा उसे कुछ भी तो नया नहीं दे पाती।

यही छटपटाहट है जो कहानी से गुजरते पाठक की आत्मिय हो उठती है और उसे लेखकिय संवेदन तक ले जाती है। यहीं उनके जीवन का सार है।

अध्याय की संदर्भसूची

अ. क्रं.	पुस्तकका नाम	लेखक का नाम	कहानीका नाम	पृ. संख्या
01)	ऋतुचक्र	नेमीचंद्र जैन		29
02)	वही	वही		32
03)	आदम और हव्वा	मेहरुन्निसा परवेज		07